यह सब किसके बारे में है? (1:8)

प्रेरितों के काम की पुस्तक की सरलतम रूपरेखा 1:8 में मिलती है: (1) यरूशलेम में गवाहियां (1-7), (2) फलस्तीन के शेष भाग में गवाहियां (8-12), (3) पृथ्वी के दूरस्थ भागों में गवाहियां(13-28)। कुछ लोग भाग एक और दो को मिलाकर इस पुस्तक को दो भागों में बांटते हैं। कई 1:8 के पहले दो खण्डों का उपयोग करते हैं, परन्तु 13-28 के भाग को दो भागों में बांटकर पुस्तक को चार भागों में बांटते हैं: (3) पौलुस की मिशनरी यात्राएं (13-21) और (4) पौलुस का कैद होना और रोम में जाना (22-28)। अन्य तो बिल्कुल ही अलग तरह से इसका विभाजन करते हैं। उदाहरण के लिए, कई लोग लूका के ''संक्षिप्त कथनों'' (प्रेरितों 6:7; 9:31; 12:24; 16:5; 19:20; 28:30, 31) को इस विभाजन के स्वाभाविक बिन्दु मानते हैं और इस प्रकार पुस्तक के छह भाग बनाते हैं।

अपने अध्ययन के लिए हम प्रेरितों 1:8 को तीन भागों में बांटेंगे और तीसरे भाग के उपभाग बनाएंगे:

I. यरूशलेम में गवाहियां (1-7)
II. शेष फलस्तीन में गवाहियां (8-12)
III. पृथ्वी के दूरस्थ भागों तक गवाहियां (13-28)
    क) पौलुस की मिशनरी यात्राएं (13-21)
    ख) पौलुस के कारावास और उसका रोम में जाना (22-28)[1]

इसके विषय

प्रेरितों के काम की पुस्तक का अध्ययन कई स्तरों पर किया जा सकता है। इसकी शिक्षा के कई पहलुओं में से एक पर ध्यान करते हुए और फिर तुरन्त किसी अलग पहलू पर ध्यान लगाकर अध्ययन करने से एक जैसा लाभ मिल सकता है। यहां कुछ दृष्टिकोण दिये गए हैं, जिनके द्वारा प्रेरितों की पुस्तक का अध्ययन किया जा सकता है:

1. बीते समय

प्रेरितों की पुस्तक को इतिहास मान कर इसका अध्ययन अतीत को ध्यान में रखकर किया जा सकता है कि क्या, कब, कहां और क्यों हुआ? यह अध्ययन दिलचस्प हो सकता है, विशेषकर यदि, यह *लोगों* पर केन्द्रित हो। लूका का इतिहास रूखा और नीरस नहीं था।

उसने इसे परमेश्वर की संतान को उत्साहित करने के साधन के रूप में लिखा।

निस्संदेह, लूका ने अपने आप को पुराने नियम के इतिहास के उन महान लेखकों के पदचिह्नों पर चलते पाया। वह केवल इतिहास ही नहीं, बल्कि *पवित्र* इतिहास लिख रहा था। *परमेश्वर*–पवित्र आत्मा, के द्वारा[2] स्वर्गदूतों के द्वारा[3], आत्मा की प्रेरणा प्राप्त भविष्यवक्ताओं के द्वारा,[4] यहां तक कि स्वयं यीशु के[5] विशेष दर्शनों के द्वारा मनुष्यों में काम करता था।

2. सिद्धांत

प्रेरितों के काम की पुस्तक का अध्ययन ईश्वरीय सिद्धांतों या शिक्षाओं के दृष्टिकोण से भी हो सकता है। इस पुस्तक में हम *उद्धार* के बारे में सच्चाई को ढूंढ सकते हैं। परमेश्वर के वचन का प्रचार हुआ। (प्रेरितों के काम की पुस्तक में परमेश्वर के वचन के चालीस से अधिक हवाले हैं।) प्रचार मसीह पर ही केन्द्रित रहा। उनके प्रत्युत्तर (विश्वास, मन फिराने और बपतिस्मे) की जो अपेक्षा की जाती थी, वह प्रभु के प्रति – समर्पण के लिए – उत्तर था!

उद्धार के विषय से जुड़ा, कलीसिया का सत्य प्रेरितों के काम की पुस्तक में मिल सकता है। सुसमाचार के वृत्तांतों में, मुख्य शब्द ''राज्य''[6] ''कलीसिया'' के कुछेक हवालों के साथ था। प्रेरितों की पुस्तक में मुख्य शब्द ''कलीसिया'' है। ''कलीसिया'' शब्द प्रेरितों के काम की पुस्तक में बीस से अधिक बार मिल सकता है और ''राज्य''[7] का हवाला कभी-कभी ही मिलता है। प्रेरितों के काम में हमें कलीसिया की उपासना के अलावा कलीसिया के काम, कलीसिया के संगठन, कलीसिया की एकता, यहां तक कि कलीसिया के अनुशासन के बारे में भी पता चलता है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में हमें पवित्र आत्मा के बारे में परमेश्वर की सच्चाई भी मिल सकती है। यद्यपि पवित्र आत्मा का उद्देश्य स्वयं को प्रकट करना नहीं है, फिर भी हमें प्रेरितों के काम की इस पुस्तक में पवित्र आत्मा के काम के पचास से अधिक हवाले मिलते हैं। इस पुस्तक से हमें पवित्र आत्मा[8] के चमत्कारी और गैर-चमत्कारी कार्य दोनों के बारे में पता चलता है।

3. प्रचार

प्रेरितों के काम की पुस्तक का अध्ययन प्रचार के दृष्टिकोण से भी किया जा सकता है। पुस्तक में दिए गए उपदेशों का विश्लेषण करने में लाभ ही है। आत्मा से प्रेरणा पाकर वक्ताओं ने यहूदी श्रोताओं में प्रचार किया, वे अलग-अलग विचारधाराएं रखने वाली अन्यजातियों में गए, और सुसमाचार के एक प्रचारक ने कलीसिया के प्राचीनों को वचन सिखाया (प्रेरितों 20:17-35)!

4. प्रार्थना

प्रेरितों के काम की पुस्तक का अध्ययन उन अवसरों को ध्यान में रखकर, जिनमें

आरज़्भिक चेले प्रार्थना करते थे और लिखित रूप में मिलने वाली प्रार्थनाओं के विश्लेषण के साथ-साथ प्रार्थना के विषय के दृष्टिकोण से भी किया जा सकता है। जो कुछ भी यीशु के शिष्यों ने किया, वही उनकी प्रार्थना भी थी।

5. विकास

प्रेरितों के काम की पुस्तक का अध्ययन आरज़्भिक कलीसिया के संज़्यात्मक विकास के दृष्टिकोण से भी किया जा सकता है। आरज़्भिक कलीसिया का विकास नाटकीय ढंग से हुआ![9] यह इतनी तेज़ी से कैसे बढ़ी? क्या रहस्य था इसके बढ़ने का? पुस्तक पढ़ते हुए हम उन कुछ बातों पर ध्यान देंगे जिनके कारण मसीहियत का विस्तार हुआ। उदाहरण-स्वरूप, लूका ने इस बात पर अधिक ज़ोर दिया कि प्रत्येक मसीही को चाहिए कि वह दूसरों को सुसमाचार के बारे में बताए। प्रेरितों के काम की पुस्तक में कलीसिया का मुज़्य काम सुसमाचार का प्रचार, यीशु के बारे में दूसरों को बताना है। प्रेरितों के काम की पुस्तक ज़ोर देती है कि सुसमाचार सभी के लिए है। पुस्तक का अधिकतर भाग इस तथ्य के प्रति अधिक रुचि लेता है कि सुसमाचार अन्यजातियों और यहूदियों दोनों के लिए है। इसके अतिरिक्त, पुस्तक इस पर भी ज़ोर देती है कि सुसमाचार लोगों के हर वर्ग के लिए है; वे चाहे धनी हों या निर्धन, पढ़े-लिखे हों या अनपढ़, नर हों या नारी, जवान हों या बूढ़े, भले हों या बुरे। (मनपरिवर्तन के उदाहरणों में से अलग-अलग पृष्ठभूमि से मसीही बनने वाले लोगों पर विचार कीजिए।)

कार्य

जैसे हमने पहले ध्यान दिया, कि प्रेरितों की पुस्तक का अलग-अलग दृष्टिकोण से जितनी भी बार अध्ययन किया जाए, वह उतना ही लाभदायक होगा। परन्तु, हमें इस सामग्री को पढ़ने का अवसर एक ही बार मिलेगा। इसलिए, मैं कोशिश करूंगा कि जितने विषयों का हमने वर्णन किया उन *सब* का और कुछ दूसरे विषयों का भी थोड़ा उल्लेख करूं। मैं सभी विषयों पर अच्छी तरह से नहीं लिख सकता। परन्तु मैं आपकी सोच को इस अध्ययन की ओर अर्जित करने की कोशिश करूंगा। फिर आप अपना शेष जीवन इस महान पुस्तक को, जिसे प्रेरितों के काम कहा गया है, और अधिक गहराई से जानने के लिए लगा सकते हैं।

प्रेरितों के काम की पुस्तक पर लिखी जाने वाली और बहुत सी पुस्तकों के विपरीत मैं इसे एक *धर्मोपदेश* की तरह लिखूंगा, ताकि इसमें उपयोग की गई सामग्री को पुलपिट और बाइबल क्लास दोनों में से कहीं भी इस्तेमाल किया जा सके। लेख आरज़्भ करते समय, मेरी योजना इस पुस्तक को छब्बीस पाठों तक सीमित रखने की थी (परिचय को छोड़ कर), ताकि यदि कोई चाहे तो इस अध्ययन को छह माह के अध्ययन के रूप में प्रयोग कर सके। शीघ्र ही मैंने पाया कि पाठ इतने लज़्बे हो गए कि बहुत ही बे-ढंगे से लगने लगे तब मैंने उनमें से दो या इससे अधिक पाठ और बना दिए। क्योंकि प्रेरितों के काम की पुस्तक में अठाइस अध्याय हैं, और उन सब अध्यायों में महान सच्चाइयां भरी पड़ी हैं, मेरे अधिकांश

पाठ औसत क्लास या उपदेश के लिए अधिक ही लम्बे होंगे। आप उपलब्ध सामग्री में से जहां आवश्यकता हो वहां उसका उपयोग कर लें। आपके मन में मुख्य बात आपके विद्यार्थियों की तत्कालिक आध्यात्मिक आवश्यकता होनी चाहिए।

यद्यपि मैं इसे धर्मोपदेश के रूप में लिखूंगा, फिर भी मैं चाहूंगा कि इस पुस्तक की सभी बातों को अच्छी तरह से समझा सकूं। स्वाभाविक है कि यदि इन बातों को मैं पाठ में नहीं समझा पाया, तो मैं इनको पादटिप्पणियों अर्थात अतिरिक्त टिप्पणियां देकर समझाने की कोशिश करूंगा।[10] क्योंकि इस शृंखला की सामग्री बाद में पक्के तौर पर आपके पास होगी, इसलिए अध्याय के बाद मुझे पत्र लिख कर सूचित करें कि समझाने में मुझ से कहां चूक हुई है, आपके सुझाव मेरी बहुत सहायता करेंगे। आपकी ओर से आने वाली *किसी* भी टिप्पणी से मुझे प्रसन्नता होगी।

इस सामग्री को व्यावहारिक बनाने और इसे अच्छी तरह समझाने के लिए मैं प्रवचन नोट्स को भी शामिल करूंगा, इसके साथ ही यदि स्थान हुआ तो मैं इसे दूसरों के सामने मूर्तिमान करने में सहायता के लिए अतिरिक्त टिप्पणियां अर्थात विज़ुअल-एड नोट्स भी दूंगा। मुझे आशा है कि प्रेरितों के काम की अमूल्य पुस्तक के प्रचार और शिक्षा देने के लिए यह सामग्री आपकी सहायता करेगी।

सामान्य की भांति, मैंने यह सामग्री कई स्रोतों से इकट्ठी की है, कइयों के बारे में आप पादटिप्पणियों को देखकर जान सकते हैं। क्योंकि मैं स्वयं चालीस वर्ष से अधिक समय से प्रेरितों के काम की पुस्तक पर शिक्षा देता और प्रचार करता आ रहा हूं, इसलिए प्रेरितों के काम की पुस्तक को समझ पाने के लिए किसी और को श्रेय देने की कोई बात नहीं है। फिर भी, मैं यूनानी विद्वान जे.डब्ल्यू. रॉबर्ट्स का उल्लेख करना चाहूंगा-वह प्रेरितों के काम की पुस्तक के कोर्स के लिए अबिलेन क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी में 1954 में मेरे अध्यापक थे और इस कड़ी के लिए मैंने कई वर्षों से जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे की *न्यू कमैन्ट्री ऑन ऐक्ट्स ऑफ़ अपोस्टल्ज़*[11] की सहायता ली है। इस कड़ी के लिए, जैसे ही समय मिला गहराई में जाकर मैंने पुस्तक का अध्ययन इस प्रकार करने का प्रयास किया है जैसे कि मैं इसे पहली बार ही पढ़ रहा हूं।

सारांश

यह नहीं कि यीशु केवल प्रेरितों की पुस्तक में दर्ज वर्षों में वर्णित काम ही ''करता और सिखाता रहा।'' वह अपनी देह, अर्थात कलीसिया[12] में जीवित है! वह हमारे द्वारा निरन्तर कार्य करता है। हम उसकी आंखें, कान, बांहें, और टांगें हैं (1 कुरिन्थियों 12:12-27)। परमेश्वर आज भी अपनी कलीसिया का इतिहास अपने स्वर्गीय, अनन्त बही-खाते में लिखता जा रहा है। अब तक उसने इसके 20 अंक पूरे कर लिए हैं और 21वें अंक का आरम्भ कर दिया है।[13] आपको क्या लगता है कि जो कुछ वह लिख रहा है, उससे वह प्रसन्न है? परमेश्वर हमें न केवल नये नियम के मसीहियों की शिक्षा को बहाल करने के

लिए सहायता ही देता है बल्कि हमारे अन्दर उनके आत्मा और उनके जोश को भी बहाल करता है! मेरी प्रार्थना है कि यह अध्ययन आपके लिए इस उद्देश्य को पूरा करने में लाभदायक हो!

विज़ुअल-एड नोट्स

यदि आप अपने पाठों या प्रवचनों की कड़ी के साथ प्रेरितों के काम का परिचय भी देना चाहें तो अच्छा होगा, आप इस भाग को ''एक कार्य'' का नाम देकर सभी पाठों को सिखाने की *अपनी* योजना के बारे में बता सकते हैं।

क्रिश्चियन पब्लिशिंग की तरफ से छठे दशक के अन्तिम वर्षों में डॉन विलिंघम का प्रवचन ''टर्निंग द वर्ल्ड अपसाइड डाउन'' (जगत को उल्टा-पुल्टा कर देना) काफी संज़्या में प्रसारित हुआ। इस पाठ में डॉन ने ध्यान दिलाया कि आरज़्भिक कलीसिया इतनी शक्तिशाली और सफल कैसे बनी और उसने सलाह दी कि इसी उदाहरण का अनुसरण किया जाए। उसने अधिकतर सामग्री प्रेरितों के काम की पुस्तक में से ही ली थी। उसने आरज़्भिक मसीहियों के व्यवहार, जीवन, शिक्षा, प्रार्थना और उनके मसीहियों और दूसरों के साथ मेल-जोल पर ज़ोर दिया। जब आप प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ें तो प्रारज़्भिक कलीसिया की विशेषताओं पर अवश्य ध्यान दें जिनकी आज हमें अत्यधिक आवश्यकता है। इन बातों को ध्यान में रखकर आप अपना खुद का पाठ तैयार करें।

पादटिप्पणियां

[1]1 से 28 अध्यायों की और विस्तृत रूपरेखा मुज़्य पृष्ठ के अन्दर दी गई है। [2]प्रेरितों 13:2;15:28; 16:6. [3]प्रेरितों 5:19, 20; 8:26; 27:23. [4]प्रेरितों 11:28; 20:11, 12. [5]प्रेरितों 18:9; 23:11. [6]ऐसा इसलिए था क्योंकि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं का मुज़्य ज़ोर यह था कि मसीह एक राज्य की स्थापना करेगा। [7]प्रिमिलीनियलिज़्म में विश्वास रखने (देखिए शब्दावली) वालों का कहना है कि यह इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने राज्य को स्थापित न करने का निर्णय कर लिया, और इसके स्थान पर कलीसिया की स्थापना कर दी। मसीह के पुनरुत्थान के बाद पहले पिन्तेकुस्त के दिन स्थापित हुई कलीसिया पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं द्वारा बताया गया राज्य ही है। [8]इस कड़ी में प्रेरितों के काम की पुस्तक में पवित्र आत्मा के काम पर अतिरिक्त लेख बाद में दिए जाएंगे। [9]लूका द्वारा लिखित छह ''संक्षिप्त कथन'' पढ़िये (6:7; 9:31; 12:24; 16:5; 19:20; 28:30, 31) प्रत्येक में *विकास* का सार है। [10]अतिरिक्त लेख अगले भागों में, स्थान उपलब्ध होने पर दिए जाएंगे। इस प्रकार हवाला सामान्यत: एक से दूसरे भाग के लिए दिया जाएगा।

[11]मैक्गर्वे की कमैन्ट्री प्रत्येक मसीही पुस्तकालय में रखी जानी चाहिए। इसमें से कुछ बातें पुरानी हो सकती हैं, परन्तु फिर भी यह प्रेरितों के काम के गहन अध्ययन के लिए अमूल्य स्रोत है। [12]इफिसियों 1:22, 23 लिखता है कि देह कलीसिया है। [13]बीसवीं सदी बीत चुकी है और इक्कीसवीं सदी आरज़्भ हो चुकी है।